>

Title: Problems being faced by weaver community in the country particularly in Varanasi and Chandouli districts of Uttar Pradesh.

श्री रामकिशुन (चन्दौली): सभापति जी, देश के विभिन्न क्षेत्रों में बुनकरों की आर्थिक तंगी और उनके उद्योगों के चौपट हो जाने से उनके पूरे कारोबार चौपट हो रहे हैं और पूर्वांचल के बनारस, और आसपास के जनपद चंदौली में आज तक जो सूचना मिली है, आर्थिक तंगी के चलते भदोई, मऊ और देश के विभिन्न कोनों में आर्थिक तंगी के चलते अब तक जो सूचनाएं मिली हैं, उसके अनुसार करीब करीब 30-40 लोग आत्महत्या कर चुके हैं। इनके कपड़े के जो कॉटन है, उसमें रेशम के दाम बढ़ गये। महंगाई के चलते इनके खाने पीने की व्यवस्था ठीक से न होने से इनके अंदर कुपोषण बढ़ रहा है। जो बुनकर बाहुल्य क्षेत्र हैं, वहां की आबादी लगातार बढ़ने से और उन ग्रामीण क्षेत्रों में विकास की मूलभूत सुविधाएं न होने से सामाजिक जीवन बुरी तरह से प्रभावित हुआ है। वहां सड़क नहीं है, बिजली नहीं है, उनकी दवा का इंतजाम नहीं है। पूरे देश में लाखों बुनकर इस क्षेत्र में लगे हुए हैं। उनकी आर्थिक स्थिति लगातार खराब हो रही है। कर्ज के चलते भी बुनकरों की आर्थिक स्थिति दिन प्रतिदिन और खराब हो रही है। मैं आपके माध्यम से सरकार से मांग करता हूं कि जो बुनकरों के कर्जे हैं, उन कर्जों को माफ किया जाए और जिन परिवार के लोगों ने आत्महत्या कर ली है, उनको मुआवजा दिया जाए। बिजली सस्ती दर पर दी जाए और उन क्षेत्रों में विकास कार्य कराएं जाएं जहां बुनकर बाहुल्य लोग रहते हैं। बनारस में एक बहुत महत्वपूर्ण कारोबार बनारसी साड़ी का होता है जहां पर लाखों की संख्या में हमारे बुनकर भाई रहते हैं। जनपद चंदौली में भी काफी बुनकर रहते हैं और ऐसे 15-20 गांव हैं जहां बुनकरों की आबादी है। मैं सरकार से मांग करना चाहता हूं कि जिन बुनकरों ने लोन लिये हैं, उनके कर्जे माफ किये जाएं और उनके लिए स्कूल, अस्पताल, बिजली और पानी का ठीक से इंतजाम किया जाए। उनके लिए रेशम और कॉटन है, वह उनको अगर सस्ती दर पर देने का इंतजाम किया जाए तो देश के जो बुनकर आर्थिक तंगी के कारण आत्महत्या करने को बाधित हो रहे हैं, उस पर रोक लगेगी और बुनकरों की आर्थिक हालत ठीक बनाई जा सकती है। धन्यवाद।

सभापति महोदय : श्री नीरज शेखर जी भी इस विषय से अपने को सम्बद्ध करते हैं।